# टी वी

## और

# क़ब्र का अज़ाब

टी वी
गुनाहो का मजमूआ है

टी वी
खरीदने पर अज़ाबे क़बर

टी वी
और रमज़ान की बेहुरमती

लेखक
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबदुर रऊफ़ साहब

# टी॰वी॰

## और

# क़ब्र का अज़ाब

लेखक

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर रऊफ़ साहब

अनुवादक

मुहम्मद इमरान क़ासमी बिज्ञानवी

न्यू ताज ऑफिस
3095, सर सैयद अहमद रोड, दरिया गंज,
नई दिल्ली-110002, फोन : 011-23266879

✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡ ✡

नाम किताब : टी.वी. और क़ब्र का अज़ाब

लेखक : हज़रत मौलाना मुफ़्ती रउफ साहब

तायदाद : 1100

प्रकाशन वर्ष : जनवरी 2005

हदिया : 8/-



><><><><><><><><><><><

प्रकाशक

न्यू ताज ऑफिस

3095, सर सैय्यद अहमद रोड,

दरिया गंज, दिल्ली-2

फोन : 011-23266879

# विषय सूची

कया? | कहां ?

# टी०वी०
# और क़ब्र का अज़ाब

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَ نَسْتَعِیْنُہٗ وَ نَسْتَغْفِرُہٗ وَ نُؤْمِنُ بِہٖ وَ نَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ ۔ وَ نَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَاشَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَمَوْلَانَا وَنَبِیَّنَا مُحَمَّداً عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا ۔

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ ۔ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۔ اِنْ تَجْتَنِبُوْا کَبَآئِرَ مَا تُنْھَوْنَ عَنْہُ نُکَفِّرْ عَنْکُمْ سَیِّاٰتِکُمْ وَنُدْخِلْکُمْ مُّدْخَلاً کَرِیْماً ۔

(سورۃ النسآء آیت نمبر ۳۱)

صَدَقَ اللّٰہُ الْعَظِیْمُ

अल्लाह तआला का इर्शाद है, जिन कामों से तुम को रोका जा रहा है तुम इन मना किए गए में से जो बड़े बड़े गुनाह हैं उन से बचते रहोगे तो हम अपने क़ायदे से तुम्हारे छोटे छोटे गुनाह और कुसूर माफ़ कर देंगे और तुम को एक इज़्ज़त वाले मक़ाम यानी जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

## दीन की बातें सुनने के आदाब

मेरे मोहतरम बुजुर्गो। दोनों जहां के सरदार जनाब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) एक बार किसी अंसारी सहाबी के जनाज़े के साथ जन्नतुल बक़ी (मदीना पाक का मश्हूर क़ब्रिस्तान) तशरीफ़ ले गए। जब वहां पहुंचे तो मालूम हुआ कि क़ब्र की तैयारी में अभी देर है, इसलिए नबीए करीम सल्ल० एक जगह बैठ गए। इस हदीस को बयान करने वाले हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूरे पाक सल्ल० के आस पास अदब से बैठ गए और हम इस अन्दाज़ से बैठ गए कि जैसे हमारे सरों पर परिन्दे बैठे हैं। सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में बे पनाह अदब और दीन की तलब व तड़प पाई जाती थी कि जब वे हुज़ूर सल्ल० के पास दीन की कोई बात सुनने के लिए बैठते तो बिल्कुल पूरी तरह तवज्जोह के साथ बैठते थे। ना इधर उधर

देखते और ना इस तरह बैठते कि जैसे उनके अन्दर तलब नहीं, अदब भी यही है।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि० फ़रमाते हैं कि उस वक़्त हुज़ूर सल्ल० की यह कैफ़ियत थी कि आप के हाथ में एक छोटी सी लकड़ी थी, आप की गर्दन झुकी हुई थी और जिस तरह एक बहुत ही फ़िक्रमन्द इंसान बैठा हुआ लकड़ी से ज़मीन को कुरेदा करता है, बिल्कुल उसी तरह नबीए करीम सल्ल० बैठे हुए लकड़ी से ज़मीन कुरेद रहे थे। और लग रहा था कि हुज़ूर सल्ल० पर बहुत ज़्यादा ग़म छाया हुआ है और बहुत गहरी फ़िक्र और सोच में आप डूबे हुए हैं और हम सब सहाबा चुप बैठे हैं। इसी बीच सरकारे दो आलम सल्ल० ने दो या तीन बार अपना सर मुबारक उठाया और फ़रमाया कि क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो। उस के बाद आप सल्ल० ने क़ब्र के अज़ाब और सवाब के बारे में काफ़ी लम्बा ख़ुलासा फ़रमाया।

## वअ्ज़ के दौरान तस्बीह न पढ़ें

इस हदीस में तीन बातें हमारे लिए सबक़ के तौर पर मौजूद हैं। पहली बात तो यह है कि जब हम किसी के पास दीन की बातें या दीन का ज़िक्र सुनने के लिए जाएं,

या दीन की बातें सीखने या पूछने के लिए जाएं तो इस का ज़रूरी अदब यह है कि इधर उधर के ख़्यालात से अपने दिमाग़ को पाक साफ़ कर के बात कहने वाले की तरफ़ पूरी तरह तवज्जोह के साथ बैठें, इसी लिए उलमा ने फ़रमाया कि दीन के तज़्करे (ज़िक्र) के दौरान और वअ़ज़ (दीनी तक़रीर) के दौरान ज़बान से ज़िक्र भी न किया जाए, जैसा कि कुछ लोग वअ़ज़ के दौरान तस्बीह भी पढ़ रहे हैं और वअ़ज़ भी सुन रहे हैं। आलिमों ने ऐसा करने से मना फ़रमाया है। इसलिए कि यह अदब के ख़िलाफ़ है। अदब यह है कि उस वक़्त ज़बानी ज़िक्र भी बन्द कर दिया जाए और अपने आप को पूरी तरह से दीन की बातें सुनने में मश्ग़ूल रखा जाए। जैसा कि इस हदीस से सहाबा का यह अमल ज़ाहिर हुआ कि वे पूरी तरह हुज़ूर पाक सल्ल॰ की तरफ़ मुतवज्जह होकर बैठे थे, और ऐसे जमकर और ख़ामोश बैठे थे जैसे उनके सरों पर पंक्षी बैठे हैं इसलिए कि परिन्दा (पंक्षी) हमेशा जमी हुई और बेजान चीज़ पर बैठता है। गोयाकि (यों कहना चाहिए कि) वे बिल्कुल बेजान हो कर इस तरह बैठे हैं कि दिल भी हाज़िर और दिमाग़ भी हाज़िर है।

## क़ब्रिस्तान जाने के आदाब

दूसरा अदब इस हदीस से यह मालूम हुआ कि

कब्रिस्तान पहुंचने के बाद अगर क़ब्र तैयार होने में कुछ देर हो तो कब्रिस्तान में बैठ सकते हैं। लकिन किसी क़ब्र पर नहीं बैठना चाहिए और न किसी क़ब्र पर खड़े होना चाहिए।

आज कल लोग जब कब्रिस्तान जाते हैं तो बहुत से लोग क़ब्रों पर बैठ जाते हैं या खड़े हो जाते हैं। शरीअ़त में इसकी इजाज़त नहीं है, ना जायज़ है। इसलिए क़ब्र से हट कर बैठना चाहिए और कब्रिस्तान में चलते वक़्त क़ब्रों के ऊपर नहीं चलना चाहिए बल्कि जो रास्ता बना हुआ हो उसपर चलना चाहिए।

## कब्रिस्तान में अपनी मौत को याद करें

एक और अदब इस हदीस में हमारे लिए यह है कि कब्रिस्तान में जाकर हमें अपनी मौत को याद करना चाहिए, अपनी क़ब्र को सोचना चाहिए, आज कल इस अदब से हमारे अन्दर बड़ी ग़फ़लत पाई जा रही है। जब हम कब्रिस्तान की तरफ़ जाते हैं तो भी दुनिया की बातें करते हैं, और कब्रिस्तान में पहुंच कर भी दुनिया ही की बातें करते हैं। वहां की क़ब्रों को देखकर हमें अपनी क़ब्र और मौत याद नहीं आती। जबकि क़ब्रिस्तान जाने का अस्ल अदब यही है कि वहां जाकर अपनी मौत को याद करें। अपने मरने को सोचें, और मरने के बाद अपने

क़ब्र के हालात को सोचें। और यह सोचें कि आज ये लोग जो क़ब्रों में दफ़न हैं, एक वक़्त वह था जब ये भी हमारी तरह दुनिया में खाते पीते थे, रहते सहते थे, लेकिन आज अपनी क़ब्रों के अन्दर अज़ाब में हैं या सवाब में हैं कुछ पता नहीं। हमें भी एक दिन यहां पहुंचना है, जिस तरह मैं एक जनाज़े को लेकर यहां आया हूं इसी तरह एक दिन मुझे भी जनाज़े की सूरत में यहां लाया जाएगा। एक दिन मौत आजाएगी, उस वक़्त न बीवी साथ आयेगी और न माल साथ आयेगा, ज़्यादा से ज़्यादा बच्चे क़ब्र तक आ जायेंगे।

## ज़िन्दगी भर की मुहब्बत का सिला

हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहब (रहमतुल्लाहि अलैह) अल्लाह तआला उन के दरजात बुलन्द फ़रमाए (आमीन)। एक बार पापोश नगर (कराची) के क़ब्रिस्तान में हज़रत मौलाना ज़फ़र अहमद उस्मानी रह० को दफ़नाने के मौक़े पर तशरीफ़ ले गए, वहां हज़रत वाला ने यह शेअ्र सुनाया।

ज़िन्दगी भर की मुहब्बत का सिला यह दे गए
दोस्त और अहबाब आकर मुझ को मिट्टी दे गए

कितना भी गहरे से गहरा दोस्त हो उसकी यह कोशिश और तमन्ना होती है कि कम से कम मिट्टी देने में ज़रूर

शरीक हो जाएं और इस को मरनें वाले का आख़िरी हक़ समझा जाता है। इसी को आदमी सोच ले कि दुनिया में जितने यार दोस्त हैं वे बहुत से बहुत इतना करेंगे कि हमें क़ब्रिस्तान पहुंचा देंगे और तीन तीन मुट्ठी मिट्टी डाल कर चले आयेंगे और ज़बान से यह कहेंगे कि आगे तू जाने, तेरा अ़मल जाने। क़ब्रिस्तान जाकर इन बातों को सोचना चाहिए, क़ब्रिस्तान जाने का असल अदब यह है, इस के ज़रीए इन्सान के दिल से दुनिया की मुहब्बत निकलती है और आख़िरत की फ़िक्र पैदा होती है और इन्सान आख़िरत के लिए फ़िक्रमन्द होता है और फिर आख़िरत की तैयारी के लिए उसके अन्दर कुछ आमादगी पैदा होती है।

## क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है

बहर हाल, इस हदीस में हुज़ूरे अक्रम सल्ल० ने तीन बार फ़रमाया कि क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, इसलिए चौथा अदब यह है कि हमें अल्लाह तआ़ला से क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगनी चाहिए। इसकी तरफ़ से भी हमारे अन्दर बड़ी ग़फ़लत पाई जाती हैं, बीसियों इन्सानों को क़ब्रिस्तान पहुंचा कर आ गए, मगर कभी अपने लिए क़ब्र के अज़ाब से पनाह नहीं मांगी और कभी

यह दुआ नहीं करते कि या अल्लाह, हमें और हमारे मां बाप को, हमारे बाल बच्चों को क़ब्र के अज़ाब से बचा। बहर हाल क़ब्र का अज़ाब बिल्कुल बरहक़ है।

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक बार मेरे पास एक यहूदी औरत आई और बातों बातों में उसने क़ब्र के अज़ाब का तज़्किरा किया और उसने साथ ही हज़रत आयशा रज़ि० को दुआ दी कि अल्लाह तआला तुझ को क़ब्र के अज़ाब से पनाह दे। जब वह औरत चली गयी तो उसके बाद सरकारे दोजहां सल्ल० घर में तशरीफ़ लाए। मैं ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल, एक यहूदी औरत आई थी, वह कह रही थी क़ब्र के अन्दर अज़ाब होता है, क्या यह बात सच है? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि हां। क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है। उस के बाद हज़रत आयशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि फिर मैं ने हुज़ूरे अक्रम सल्ल० को हमेशा हर नमाज़ के बाद क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगते हुए देखा।

आप का यह अमल हमारे लिए तालीम है कि एक दिन मरने के बाद क़ब्र में ज़रूर जाना है। अगर क़ब्र में राहत मिल गई तो फिर आगे भी राहत ही राहत है। और अगर ख़ुदा न करे वहां अज़ाब हो गया तो फिर आगे की मन्ज़िलें और कठिन होंगी। इसलिए हज़रत उस्मान बिन

अ़फ्फ़ान रज़ि० का मामूल था कि जब आप किसी क़ब्र पर तशरीफ़ लेजाते तो इतना रोते कि आप की दाढ़ी मुबारक आंसुओं से भीग जाती। किसी ने उन से सवाल किया कि हज़रत आप जन्नत और दोज़ख़ के तज़्किरे पर इतना नहीं रोते जितना क़ब्र पर जाने के बाद रोते हैं। आपने जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि यह क़ब्र आख़िरत की मन्ज़िलों में से पहली मन्ज़िल है। जो आदमी यहां क़ब्र के अ़ज़ाब से छुटकारा पा गया तो बाक़ी मन्ज़िलों पर भी वह कामयाब होता चला जाएगा और अगर ख़ुदा न करे वह इसी मन्ज़िल पर फंस गया और उस को क़ब्र का अ़ज़ाब शुरू हो गया तो फिर आगे उस के लिए और ज़्यादा मुश्किलात होंगी। इस लिए पहली मन्ज़िल की बड़ी फ़िक्र होती है। ख़ुदा करे कि यह सुकून से गुज़र जाए, सलामती के साथ गुज़र जाए ताकि आगे की मन्ज़िलें आसान से आसान होती चली जाएं।

## आलमे बर्ज़ख़ और उसकी मिसाल

यह क़ब्र का अ़ज़ाब "आ़लमे बर्ज़ख़" में होता है जो दुनिया से अलग एक आ़लम (जहान) है। जिस गढ़े में हम मय्यत को उतारते हैं उस में भी अ़ज़ाब होता है। जिस हालत में मय्यत को उतारा जाता है अगरचे वह वैसी ही नज़र आती है मगर उस की रूह का आ़लमे बर्ज़ख़ में

पहुंच कर भी जिस्म से ताल्लुक़ रहता है और अज़ाब व सवाब यह सब अगरचे आलमे बर्ज़ख़ में अस्ल में रूह को होता है लेकिन उस के साथ साथ यह जिस्म भी वहां की राहत और तकलीफ़ को महसूस करता है और कभी कभी गढ़े में होने वाले अज़ाब व राहत का दुनिया वालों को नज़ारा दिखा दिया जाता है जिस के बहुत से वाक़िआत हाफ़िज़ जलालुद्दीन सयूती रह० और दूसरे आलिमों ने अपनी किताबों में लिखे हैं।

इस की मिसाल बिल्कुल ऐसी ही है जैसे कोई आदमी सो रहा हो, और सपने के अन्दर उसे मारा जा रहा हो या जलाया जा रहा हो या क़त्ल किया जा रहा हो। अब ख़्वाब के अन्दर तो ये सब हालात उस पर गुज़र रहे हैं लेकिन हम उस को बिल्कुल ठीक ठाक सोया हुआ देख रहे हैं। लेकिन उस के जिस्म पर थोड़े बहुत आसार (निशानियां) महसूस कर लेते हैं कि वह डर रहा है या कपकपा रहा है या उसका बदन हरकत कर रहा है। और अगर ख़्वाब में बड़ी बड़ी नेमतें हासिल कर रहा है तब भी वह हमें यहां सोता हुआ नज़र आता है। ना खाता हुआ नज़र आता ना पीता हुआ मगर ख़्वाब में ख़ूब खा रहा है पी रहा है, सैर व तफ़रीह कर रहा है। बस इस दुनिया के अन्दर मय्यत के अज़ाब और सवाब को समझने के लिए

यह एक मिसाल काफ़ी है।

लेकिन कभी कभी अल्लाह तआला सबक़ और नसीहत के लिए इस दुनिया के अन्दर भी क़ब्र का अ़ज़ाब दिखा देते हैं और कभी वहां की नेमतें दिखा देते हैं। और यह सिलसिला सरकारे दोआ़लम सल्ल० से चला आ रहा है। उलमाए किराम ने इस मौज़ू (विषय) पर बड़ी बड़ी किताबें लिखी हैं। और अपने अपने ज़माने के वे वाक़िआ़त लिखे हैं जिन में क़ब्र का अ़ज़ाब जागने की हालत में या ख़्वाब की हालत में देखा गया है।

## क़ब्र के अ़ज़ाब का एक वाक़िआ़

हाफ़िज़ इब्ने रजब हम्बली रह० ने अपनी किताब "अहवालुल क़ुबूर" में लिखा है कि एक आदमी ने ज़िक्र किया कि मैं अपनी ज़मीन पर काम किया करता था। एक दिन शाम के वक़्त जब मैं घर की तरफ़ वापस जाने लगा तो रास्ते ही में मग़्रिब का वक़्त हो गया। रास्ते में क़रीब ही एक मक़बरा था मैं ने मग़्रिब की नमाज़ वहां पढ़ने का इरादा किया चुनांचे मैं ने और मेरे एक दो साथियों ने वहां जाकर मग़्रिब की नमाज़ अदा की और मग़्रिब की नमाज़ अदा करके शाम के मामूलात और तसबीहात वहीं बैठ कर पूरी कर रहा था और जब धीरे धीरे अंधेरा छाने लगा तो अचानक मुझे किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई

दी मैं ने इधर उधर देखा तो कुछ नज़र न आया। थोड़ी देर के बाद फिर "हाय हाय" की आवाज़ सुनाई दी जिस की वजह से मैं डर गया और मेरे रोंगटे खड़े हो गए, फिर जब मैं ने आवाज़ की तरफ़ ध्यान लगाया तो आवाज़ क़ब्र के अन्दर से आ रही थी। मैं क़ब्र के पास गया और अपने कान क़ब्र से लगाए तो क़ब्र के अन्दर से हाय हाय की आवाज़ के साथ यह आवाज़ भी आ रही थी कि :

قَدْ كُنْتُ اُصَلِّیْ وَقَدْ كُنْتُ اَصُوْمُ

(तर्जुमा) :- "मैं तो नमाज़ भी पढ़ा करता था और रोज़े भी रखा करता था"। फिर मुझे यह सज़ा क्यों दी जा रही है? और उस की आवाज़ ऐसी दर्दनाक थी कि मैं बयान नहीं कर सकता। फिर मैं उस क़ब्र के पास से उठा और मेरे जो दूसरे साथी क़रीब ही नमाज़ पढ़ रहे थे उन को बुला कर ले आया और उन से कहा कि तुम भी ज़रा यह आवाज़ सुनो क्या वाक़ई यह आवाज़ आ रही है या मेरे दिमाग़ का ख़लल है। जब उन्होंने कान लगाए तो उन को भी यह आवाज़ सुनाई दी उन्होंने बताया कि यह सच मुच की आवाज़ आ रही है, तुम्हारे दिमाग़ का ख़लल नहीं है। बहर हाल उस दिन तो हम जल्दी से अपने मामूलात पूरे कर के वापस चले गए दूसरे दिन मैं वापसी में फिर मग़रिब की नमाज़ पढ़ने उसी मक़बरे में गया और

यह सोच कर गया कि मैं जाकर आज भी वह आवाज़ सुनूंगा। आया वह आवाज़ आज भी आ रही है या नही? चुनांचे आज भी मैं ने वहां जाकर पहले मग़रिब की नमाज़ अदा की और फिर अपने मामूलात में मशग़ूल हो गया। फिर बिल्कुल उसी तरह आज भी क़ब्र से आवाज़ आने लगी जिस तरह पहले दिन आ रही थी और मैं ने क़ब्र के पास जाकर कान लगाए तो वही अल्फ़ाज़ सुने जो कल सुने थे। इस लिए मुझे यक़ीन हो गया कि इस मुर्दे को क़ब्र का अ़ज़ाब हो रहा है। फिर जब मैं वहां से लौटा तो मुझ पर ज़बरदस्त डर तारी हो गया और डर की वजह से दो महीने तक मुझे बुख़ार चढ़ा रहा।

## आम तौर पर क़ब्र का अ़ज़ाब छिपा रहने का सबब

हदीसों में हुज़ूरे पाक सल्ल० ने खुले तौर पर फ़रमाया है कि क़ब्र में मय्यत को जो अ़ज़ाब होता है उसकी चीख़ व पुकार की आवाज़ इन्सान व जिन्नों के अ़लावा बाक़ी तमाम मख़लूक़ सुनती है और इन्सान व जिन्नों को इसलिए आवाज़ सुनाई नहीं देती कि अगर उन को भी आवाज़ सुनाई देने लगे तो सारे के सारे सीधे रास्ते पर आजाएं। जितने काफ़िर हैं वे सब ईमान ले आयें और जो मुसलमान बेदीन और गुनाहों व बुराइयों में फंसे हुए हैं वे सब अपना सुधार कर के नेक और पारसा बन जायें।

तो फिर सारा इम्तिहान ख़त्म हो जाए, और मक़सद ख़त्म होजाए। क्योंकि यह दुनिया दारूलअ़मल (काम और अ़मल करने की जगह) है, दारूलजज़ा (बदले की जगह) नहीं है। यहां ग़ैब पर ईमान मोतबर है कि न कुछ देखा है और न अक़्ल में कुछ आता है मगर हुज़ूरे पाक ने जो फ़रमा दिया उस पर हमारा ईमान है। देखने से हमें इतना यक़ीन न आता जिस तरह बे देखे हुज़ूर सल्ल० के फ़रमान पर हमें यक़ीन है, बस इसी ईमान की क़ीमत है और इसी पर अज्र व सवाब है।

लेकिन यह अल्लाह तआ़ला की रहमत है कि क़ब्र के इस अ़ज़ाब को नज़रों से ओझल करने के बावजूद कभी कभी कहीं कहीं हमें दिखा देते हैं और इस लिए दिखा देते हैं ताकि हम इब्रत (नसीहत) पकड़ें और सबक़ सीखें।

## क़ब्र के अ़ज़ाब का सबब गुनाह हैं

यह बात हर मुसलमान जानता है कि क़ब्र का अ़ज़ाब गुनाहों पर होता है और यह क़ब्र का अ़ज़ाब इस लिए रखा गया है ताकि हम लोग गुनाहों से बाज़ आजाएं। अल्लाह तआ़ला ने जिन कामों का हुक्म दिया है उन को करें और गुनाहों से अपने आप को बचाने की फ़िक्र करें, अगर ख़ुदा न करे हम ने अपने आप को गुनाहों से बचाने की कोशिश न की, और कोई मुसलमान बिना तौबा किए

इस दुनिया से चला गया तो फिर क़ब्र का अ़ज़ाब यक़ीनी है। यूं अल्लाह तआ़ला जिसे चाहें माफ़ फ़रमा दें उन की माफ़ी की कोई हद नहीं है, उनकी रहमत की कोई सीमा नहीं है लेकिन क़ायदा और क़ानून यही है कि जो आदमी बिना तौबा किए दुनिया से जाएगा और गुनाहों के साथ उन के पास जाएगा तो क़ब्र में पहुंचते ही उसको अ़ज़ाब होगा। जब यह बात है तो हम सब को गुनाहों से बचने की बहुत ज़्यादा फ़िक्र करने की ज़रूरत है। हम लोग अल्लाह के करम से नमाज़ भी पढ़ लेते हैं। ज़िक्र भी कर लेते हैं, तिलावत भी हो जाती है, तस्बीहात भी पढ़ ली जाती हैं। लेकिन जब हम अपना जायज़ा लेते हैं तो हमें अपने अन्दर यह बात साफ़ तौर पर नज़र आती है कि गुनाहों के छोड़ने में हम लोग बड़े सुस्त हैं बड़े बड़े गुनाहों के अन्दर हम मुब्तला हैं और हम उन को गुनाह भी नहीं समझते और छोड़ने की फ़िक्र भी नहीं करते और गुनाहों के अन्दर यह ख़ासियत मानी हुई है कि जब कोई आदमी किसी गुनाह को लगातार करता रहता है तो धीरे धीरे उस के दिल से उस की बुराई निकल जाती है, उस गुनाह का गुनाह होना निकल जाता है, तो फिर तौबा की तौफ़ीक़ भी कम होती है क्योंकि अब उस का ज़मीर उस को गुनाह पर मलामत करना छोड़ देता है। और जिस

दिन ज़मीर मर गया तो फिर समझ लो कि तौबा की शायद ही तौफ़ीक़ हो। गुनाहों के अन्दर हमारा मामला यही है कि गुनाह हम करते चले जा रहे हैं, यहां तक कि हम गुनाहों के आदी हो गए हैं। और आदी होने के बाद कुछ गुनाह हमारे अन्दर ऐसे आम हो गए हैं कि ज़ाहिर में ऐसा लगता है कि उन से बचने का हम शायद इरादा भी नहीं रखते, और जब किसी गुनाह से बचने का इरादा ही न हो तो फिर तौबा की तौफ़ीक़ कहां से होगी ? और जब तौबा की तौफ़ीक़ न हुई तो फिर आंख बन्द होते ही क्या होगा ? अल्लाह तआला बचाए इस में सख़्त ख़तरा है कि आंख बन्द होते ही क़ब्र का अज़ाब शुरू न हो जाए।

## टी०वी० का गुनाह

यूं तो हम सुब्ह से शाम तक बहुत से गुनाह करते हैं लेकिन इस वक़्त मैं सिर्फ़ एक गुनाह का बयान करना चाहता हूं और वह टी०वी० देखने का गुनाह है। अब देखिये यह गुनाह कितना आम है। सारी दुनिया में फैल गया है यहां तक कि जो लोग पांचों वक़्त के नमाज़ी हैं, हाजी हैं, रोज़ा रखने वाले हैं, वे भी इस गुनाह के अन्दर मुब्तला हैं। और मेरे ख़्याल में शायद ही कोई आदमी होगा जो इस गुनाह को गुनाह समझता हो और अब यह गुनाह तेज़ी से बढ़ता ही चला जा रहा है और दिन बदिन

इस में बढ़ोतरी हो रही है, इस गुनाह से बचने वाले अब ज़्यादा नज़र नहीं आते और मुब्तला होने वाले बढ़ते चले जा रहे हैं, और अब तो बड़े बड़े डिश एंनटीना लगने शुरू हो गए हैं, जिस के ज़रीए सारी दुनिया की फ़िल्में घर बैठे बैठे आसानी से देखी जा सकती हैं। घर घर सिनेमा हाल बना हुआ है। पहले सिनेमा जाकर फ़िल्म देखने को इस क़दर बुरा और ज़लील काम समझा जाता था कि कोई शरीफ़ आदमी ऐसा करने का ख़्याल नहीं कर सकता था। लेकिन अब वही शरीफ़ लोग घर के अन्दर बड़ी ही आज़ादी के साथ निडर हो कर सारे घर वालों के साथ, बेटों और बेटियों के साथ बैठ क़र फ़िल्में देखते हैं, और इस पर उन्हें ज़र्रा बराबर हया और शर्म महसूस नहीं होती। यह क्या हो गया? बात यह है कि बुराई का बुरा होना दिल से निकल गया, और इस का गुनाह होना दिमाग़ से बिल्कुल निकल गया, इस की बुराई ज़ेहन से निकल गई, शर्म का ख़ात्मा हो गया। बस इसी का यह नतीजा है। अल्लाह की पनाह।

## फ़िल्म देख कर सवाब पहुंचाना

ताज्जुब की बात यह है कि इस गुनाह को गुनाह नहीं समझते। इस पर एक अजीब व ग़रीब वाक़िआ याद आया। यह वाक़िआ एक रिसाला "टी॰वी॰ की

तबाहकारियां" के अन्दर लिखा हुआ है कि एक साहब लाहौर के रहने वाले थे, उन की मां किसी मौक़े पर कराची आई हुई थीं, यहां आकर वह बीमार होगयीं, उन को अस्पताल में दाख़िल किया गया, और उन साहब को लाहौर में सूचना दी गई, वह भी लाहौर से कराची आ गए। पूरी तवज्जोह से उन का इलाज किया गया, लेकिन आख़िर कार उन का इन्तिक़ाल हो गया और उन को कफ़ना कर दफ़्न कर दिया गया। जब वह साहब अपनी वालिदा को दफ़्न कर के वापस आ रहे थे तो रास्ते में एक मैदान के अन्दर देखा कि शामियाने लगे हुए हैं। क़नातें कसी हुई हैं। यह समझे कि कोई सियासी जलसा हो रहा है। लेकिन जब वह मालूम करने के लिए गए तो वहां देखा कि फ़िल्म चल रही है और तमाम लोग मैदान में बैठे फ़िल्म देख रहे थे। इन साहब ने लोगों से पूछा कि क्या माजरा है? लोगों ने बताया कि एक साहब का इन्तिक़ाल हो गया था आज उन का चेहल्लुम (चालीसवां) है। और हम सब उनके चहल्लुम में शरीक हैं मरहूम को यह फ़िल्म बहुत पसन्द थी, इस लिए हम उन के ईसाले सवाब (सवाब पहुंचाने) के लिए यह फ़िल्म देख रहे हैं। ताकि उन को इसका सवाब पहुंचे। अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे।

## टी०वी० गुनाहों का मजमूआ है

अब ऐसे लोग भी बहुत ज़्यादा होंगे जो यह समझते हैं कि टी०वी० देखने में क्या हरज है? चुनांचे टी०वी० देखने वालों में अक्सर लोग यह कह देते हैं कि टी०वी० देखने में क्या हरज है? अफ़सोस जिस चीज़ के गुनाह होने में कोई शक नहीं आज उस का गुनाह होना समझ में नहीं आ रहा है। हालांकि दो तीन बातें हर मुसलमान जानता है कि वे इस्लाम में बिलकुल हराम हैं। और ये चीज़ें टी०वी० में मौजूद हैं। जिन में (१) गाना बजाना है। यह इस्लाम में बिलकुल हराम है। और हुज़ूरे पाक सल्ल० के बहुत से इर्शादात इस के हराम होने पर मौजूद हैं। (२) गाने बजाने के आलात (यंत्र) का इस्तेमाल भी मुस्तकिल नाजायज़ और गुनाह है। जैसे ढ़ोलक, सारंगी, बांसुरी, हारमूनियम, डिस्को इन सब आलात (यंत्रों) का इस्तेमाल गुनाह और नाजायज़ है। हुज़ूरे पाक सल्ल० का खुला इर्शाद है कि मैं दुनियां मे पैग़म्बर (नबी) ही इस लिए बना कर भेजा गया हूं ताकि दुनिया से गाने बजाने के सामानों को मिटा दूं, और हम मुसलमान होकर भी इन को इस्तेमाल कर रहे हैं और ख़ास तौर पर टी०वी० के अन्दर इन आलात (सामानों और यंत्रों) का भरपूर इस्तेमाल पाया जाता है।

## टी०वी० और बद निगाही

(३) नामेहरम मर्दों औरतों का आपस में मेल जोल और मिलाप दिखाया जाता है। यह तो इस की रूह है। वह टी०वी०, टी०वी० नहीं जिस में मर्द और औरत का मेल जोल न दिखाया जाए। इस के अ़लावा टी०वी० में नाच दिखाया जाता है, कोई फ़िल्म नाच से ख़ाली नहीं, यह नाच ख़ुद एक मुस्तकि़ल गुनाह और हराम है। क़ुरआन करीम ने मर्दों और आरतों को साफ़ साफ़ यह हुक्म दिया है कि :

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ۔ وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ۔

(तर्जुमा):- यानी आप ईमानदार मर्दों से फ़रमा दें कि वे अपनी नज़रों को नीची कर लें, और अपनी शर्मगाह की हिफ़ाज़त करें और मुसलमान औरतों से भी फ़रमा दें कि वे भी अपनी नज़रों को नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, और अपने बनाव व सिंगार को ज़ाहिर न करें।

अब क़ुरआन करीम का हुक्म तो यह है कि निगाहों को नीची रखें, और टी०वी० के अन्दर नज़र डालना ही

मक़्सद है, और किसी मर्द का किसी औरत पर, या किसी औरत का किसी मर्द पर शहवत (ख़्वाहिश) से नज़र डालना। इसको हदीस शरीफ़ में आंखों का ज़िना क़रार दिया गया है। इस लिए आंखों से देखना आंखों का ज़िना है, हाथ से छूना हाथ का ज़िना है, और फिर देखने के लिए पैरों से चल कर जाना पैरों का ज़िना है, और दिल में ख़्वाहिश और तमन्ना करना यह दिल का ज़िना है। यही सब कुछ टी०वी० के अन्दर होता है चाहे समाचार हो, ड्रामा हो, चाहे फ़िल्म हो, चाहे कोई इश्तिहार हो हर जगह यही रूप सामने होता है कि एक मर्द और एक औरत, और देखने वालों का सारा मक़्सद जिन्सी तस्कीन और अपनी शहवत को पूरा करना, और इसी ख़्वाहिश से उस पर नज़र डालना, और घंटों उस पर नज़र जमाए रखना, ये सब काम आंखों का ज़िना है। ये गुनाह की वे मोटी मोटी बातें हैं जिनको हम रोज़ाना सुनते रहते हैं और पढ़ते रहते हैं लेकिन फिर क्या वजह है कि टी०वी० के अन्दर हमें गुनाह की ये बातें नज़र नहीं आतीं और हम यह समझते हैं कि टी०वी० देखने में कोई हरज नहीं। बहरहाल, इस के गुनाह होने में कोई शक नहीं अब अगर हम इस को गुनाह न समझें तो यह हमारी ना समझी है। इन्हीं गुनाहों की वजह से हमारे तमाम आ़लिमों ने

टी०वी० देखने और उस के घर में रखने को गुनाह और नाजायज़ क़रार दिया है, और इस बारे में उन के फ़त्वे मौजूद हैं।

## टी०वी० के साथ दफ़्न होने का इब्रत्नाक वाक़िआ

जब से टी०वी० देखने का रिवाज बढ़ा है, टी०वी० देखने वालों के मरने के बाद क़ब्र में अज़ाब होने के बड़े ही इब्रत नाक वाक़िए भी सामने आरहे हैं। जिन से हमें फ़ौरन सबक़ लेना चाहिए। क्योंकि अल्लाह तआला ये वाक़िआत इसी लिए दिखाते हैं कि हम लोग सबक़ हासिल करें।

चुनांचे इसी रिसाले "टी०वी० की तबाहकारियां" में एक औरत का बड़ा इब्रतनाक वाक़िआ लिखा है कि रमज़ान शरीफ़ के महीने में इफ़्तार के वक़्त घर में एक मां और बेटी थीं। मां ने बेटी से कहा कि आज घर पर मेहमान आने वाले हैं। इफ़्तारी तैयार करनी है, इस लिए तुम भी मेरे साथ मदद करो, और काम में लगो, और इफ़्तारी तैयार कराओ। बेटी ने साफ़ ज़वाब दिया कि अम्मां इस वक़्त टी०वी० पर एक ख़ास प्रोग्राम आ रहा है, मैं उस को देखना चाहती हूं। उस से निमट कर कुछ करूंगी। चूंकि वक़्त कम था इस लिए मां ने कहा कि तुम इस को छोड़ दो, पहले काम कराओ। मगर बेटी ने मां

की बात सुनी अनसुनी कर दी। और फिर इस ख़्याल से ऊपर की मन्ज़िल में टी०वी० लेकर चली गई कि मैं अगर यहां नीचे बैठी रही तो मां बार बार मुझे मना करेगी और काम के लिए बुलाएगी। चुनांचे ऊपर कमरे में जाकर अन्दर से कुन्डी लगाई और प्रोग्राम देखने में मशग़ूल हो गई। नीचे मां बेचारी आवाज़ देती रह गई। लेकिन उसने कुछ परवा न की। फिर मां से इफ़्तारी की जो तैयारी हो सकी उसने करली। इतने में मेहमान भी आ गए, और सब लोग इफ़्तारी के लिए बैठ गए, मां ने फिर लड़की को आवाज़ दी ताकि वह भी आकर रोज़ा इफ़तार कर ले। लेकिन बेटी ने कोई जवाब नहीं दिया तो मां को फ़िक्र हुई। चुनांचे वह ऊपर गयी और दरवाज़े पर जाकर दस्तक दी और उसको आवाज़ दी, लेकिन अन्दर से कोई जवाब न आया तो अब मां और घबराई कि अन्दर से जवाब क्यों नहीं आ रहा है। चुनांचे मां ने उस के भाइयों को ऊपर बुलाया और उस का बाप भी ऊपर आ गया। उन्हों ने आवाज़ और दस्तक दी, मगर जब अन्दर से कोई जवाब न आया तो आख़िरकार दरवाज़ा तोड़ कर अन्दर गए तो देखा कि टी०वी० के सामने औंधे मुंह ज़मीन पर पड़ी है। और इन्तिक़ाल हो चुका है। अब सब घर वाले परेशान हो गए। उस के बाद जब उस की लाश उठाने की कोशिश

की तो उस की लाश न उठे, और ऐसा महसूस होने लगा कि वह कई टन वज़नी हो गई है। अब सब लोग परेशान होगए कि इस की लाश क्यों नहीं उठ रही है, इसी परेशानी के आलम में एक साहब ने जो टी॰वी॰ उठाया तो उस की लाश भी उठ गयी, और हल्की हो गई। अब हाल यह हुआ कि अगर टी॰वी॰ उठाएं तो उसकी लाश हल्की हो जाए, और अगर टी॰वी॰ रख दें तो उस की लाश भारी हो जाए। इसी तरह टी॰वी॰ उठा कर उस की लाश नीचे लाए और उस को नहलाया, कफ़न दिया। जब उस का जनाज़ा उठाने लगे तो फिर उसकी चारपाई ऐसी हो गई जैसे किसी ने उस के ऊपर पहाड़ रख दिया हो। लेकिन जब टी॰वी॰ को उठाया तो आसानी से चारपाई भी उठ गई। तमाम घर वाले शर्मिन्दगी और मुसीबत में पड़ गए, आख़िर कार जब टी॰वी॰ जनाज़े के आगे चला तब उस का जनाज़ा घर से निकला। अब इसी हालत में टी॰वी॰ के साथ उस पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई और क़ब्रिस्तान ले जाने लगे। आगे टी॰वी॰ पीछे जनाज़ा चला, फिर क़ब्रिस्तान में ले जाने के बाद जब मय्यत को क़ब्र में उतारा और क़ब्र को बन्द कर के और उस को ठीक कर के जब लोग वापस जाने लगे तो लोगों ने कहा कि अब टी॰वी॰ वापस ले चलो लेकिन जब टी॰वी॰ उठाने लगे तो

उस लड़की की लाश क़ब्र से बाहर आगई-कितनी इब्रत की बात है।

فَاعْتَبِرُوْا يَآ اُولِى الْاَبْصَارِ

(तर्जुमा) :-ऐ अक़्ल वालो इब्रत हासिल करो।

लोगों ने जल्दी से टी॰वी॰ को वहीं रखा और दोबारा उसकी लाश को क़ब्र के अन्दर करके क़ब्र बन्द करदी, और दोबारा टी॰वी॰ उठा कर चले तो दोबारा उस लड़की की लाश क़ब्र से बाहर आगई। अब लोगों ने कहा कि यह तो टी॰वी॰ के साथ ही दफ़्न होगी। इसके अलावा कोई और सूरत नज़र नहीं आती आख़िर कार तीसरी बार उस की लाश को क़ब्र में रखा। और टी॰वी॰ भी उस के सरहाने रख दिया गया, और उस के साथ ही उस को दफ़न करना पड़ा।

ख़ुदा की पनाह-अब आप सोचिए कि उस लड़की का क्या हश्र हुआ होगा और क्या अन्जाम हुआ होगा। हमारी इब्रत के लिए अल्लाह तआला ने हमें दिखा दिया, अब भी अगर हम इब्रत न पकड़ें तो यह हमारी नालायक़ी है, वरना अल्लाह तआला की तरफ़ से तो हुज्जत पूरी हो चुकी है-यह तो लड़की का वाक़िआ था, अब एक मर्द का क़िस्सा सुन लीजिए।

## टी०वी० ख़रीदने पर क़ब्र का अ़ज़ाब

सऊ़दी अ़रब में दो दोस्त रहते थे, एक रियाज़ में, एक जद्दा में। दोनों नेक आदमी थे, दोनों में आपस में बड़ी गहरी दोस्ती और मुहब्बत थी, रियाज़ वाले दोस्त ने अपने बच्चों की बहुत ज़िद पर उन को एक टी०वी० ख़रीद कर ला दिया। अब घर वाले टी०वी० देखने लगे। कुछ दिनों के बाद उसका इन्तिक़ाल हो गया, उसके इन्तिक़ाल के बाद जद्दा वाले दोस्त ने ख़्वाब में रियाज़ वाले दोस्त की ज़ियारत की तो देखा कि वह तकलीफ़ में है। उसने पूछा कि भाई तुम्हारा क्या हाल है? उस दोस्त ने जवाब दिया कि क्या बताऊं, जब से मेरा इन्तिक़ाल हुआ, अपने घर वालों को टी०वी० ला कर देने की वजह से अ़ज़ाब में मुब्तला हूं। अब वे तो टी०वी० देख कर मज़े उड़ा रहे हैं, और मैं अ़ज़ाब में मुब्तला हूं, और मैं ही जानता हूं कि मेरा वक़्त किस तरह मुसीबत के साथ गुज़र रहा है। मैं बहुत सख़्त तकलीफ़ में हूं। तुम मेरे घर जाकर उन को समझाओ कि किसी तरह घर से टी०वी० निकाल दें, ताकि मेरा अ़ज़ाब दूर हो जाए। उस दोस्त ने कहा कि अच्छा मैं तुम्हारे घर जाकर उन को समझाऊंगा।

जब सुब्ह हुई तो उस को रात वाला ख़्वाब याद नहीं रहा और सारे दिन अपने काम काज में मश्ग़ूल रहा जब

रात को सोया तो ख़्वाब में फिर रियाज़ वाले दोस्त की ज़ियारत हुई। उस ने शिकायत की कि मैं ने तुम से कहा था कि मेरे घर जल्दी जाओ, मैं बहुत तक्लीफ़ में हूं, तुम अभी तक मेरे घर नहीं गए। उस दोस्त ने फिर वायदा कर दिया कि मैं कल सुब्ह ज़रूर जाऊंगा–यह जद्दा वाले दोस्त कहते हैं कि दूसरे दिन मेरा रियाज़ जाने का इरादा था लेकिन फिर कोई ऐसा काम पेश आ गया जिसकी वजह से मैं न जा सका। जब रात को सोया तो ख़्वाब में फिर उस दोस्त की ज़ियारत हुई, फिर उसने शिकायत की तुम मुझ से कहते हो कि जाऊंगा, लेकिन तुम जाते नहीं हो, और मैं यहां बहुत सख़्त तक्लीफ़ और अज़ाब में हूं–उस दोस्त ने वायदा किया कि कल सुब्ह ज़रूर ही जाऊंगा।

चुनांचे जद्दे वाला दोस्त सुब्ह होते ही जहाज़ के ज़रीए रियाज़ अपने दोस्त के घर गया, और सब घर वालों को जमा किया और फिर उन को अपना ख़्वाब बताया कि तुम्हारे वालिद साहब इस तरह सख़्त अज़ाब में गिरिफ़्तार हैं, और उन्होंने अज़ाब की वजह यह बताई कि चूंकि मैं ने टी०वी० लाकर दिया है इस लिए मरने के बाद अज़ाब हो रहा है। मेरे घर वाले तो ऐश कर रहे हैं, और मैं अज़ाब में मुब्तला हूं। जब उन्हों ने अपने बाप के अज़ाब के बारे

में सुना तो वह लोग ख़ूब रोने लगे कि हाय हमारी वजह से हमारे वालिद साहब को अ़ज़ाब हो रहा है। उस के बाद बड़ा बेटा अपनी जगह से उठा और उसने टी०वी० को उठा कर ज़मीन पर पटख़ दिया, जिस से टी०वी० के टुकड़े टुकड़े हो गए। वे टुकड़े उठा कर उसने कूड़े के डब्बे में डाल दिए, और उसने कहा कि आज के बाद हमारे घर में यह लानत नहीं होगी। जिसकी वजह से हमारे बाप को अ़ज़ाब हुआ है।

जद्दा वाले दोस्त कहते हैं कि मैं बहुत ख़ुश हुआ कि औलाद माशाअल्लाह नेक है। उन्हों ने बहुत जल्द अपने बाप की तक्लीफ़ का ख़्याल कर लिया, और अपना भी ख़्याल कर लिया। अपने बाप को भी क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा लिया, और अपने आप को भी जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया। फिर मैं वापस जद्दा अपने घर आ गया। रात को सोया तो फिर ख़्वाब में रियाज़ वाले दोस्त की ज़ियारत हुई, अब जो देखा तो माशाअल्लाह वह मुस्कुरा रहा है, और ख़ुश है, मैं ने पूछा कि कहो, क्या हाल है? उसने कहा कि भाई, अल्लाह तआ़ला तुम को जज़ाए ख़ैर दे, जिस तरह तुम ने मेरी मुसीबत दूर कर दी, अल्लाह तआ़ला तुम्हारी मुसीबतें भी दूर करे। जिस वक़्त मेरे बड़े बेटे ने टी०वी० ज़मीन पर पटख़ा है उसी वक़्त से मेरा

अ़ज़ाब भी ख़त्म हो गया। और अल्लाह तआ़ला ने मुझे उस अ़ज़ाब से नजात दे दी है।

## नजात गुनाह छोड़ने पर है

बुज़ुर्गो ! ये वाक़िआ़त हमारे लिए दिखाए जा रहे हैं ताकि हम सबक़ लें कि नमाज़ पढ़ने के बावजूद, ज़िक्र करने के बावजूद, तिलावत करने के बावजूद, ख़ुदा न करे अगर ये गुनाह करते हुए बिना तौबा के इन्तिक़ाल हो गया तो क़ब्र में जाते ही अ़ज़ाब हो सकता है और तौबा की तौफ़ीक़ तो जब ही हो सकती है जब हम इस को गुनाह समझें और इस से बचने की कोशिश करें। लेकिन अगर ख़ुदा न करे इस गुनाह को हम गुनाह ही न समझें जैसा कि कुछ लोगों का हाल है। तो वे क्या तौबा करेंगे और अगर समझ कर भी न छोड़ा तो क्या फ़ायदा हुआ। इस लिए कि किसी अ़मल को गुनाह समझने का मतलब यही है कि यह अ़मल (काम) छोड़ने की चीज़ है करने की चीज़ नहीं। लेकिन हम मामूली बहानों की ख़ातिर, बच्चों की वजह से, बीवी के न मानने की वजह से, बच्चों के इधर उधर जाने के बहाने, और न मालूम हम ने इस को रखने और देखने के लिए कितने उ़ज़्र और बहाने तलाश कर रखे हैं–याद रखिए किसी बहाने से चोरी हलाल नहीं हो सकती, किसी बहाने से शराब हलाल नहीं हो सकती,

इसी तरह टी०वी० को देखना भी जायज़ नहीं हो सकता, यह गुनाह तो छोड़ना ही पड़ेगा। और जो छोड़ेगा वही नजात पाएगा,वही आफ़ियत में आएगा, और जो करता रहेगा वह नजात नहीं पाएगा।

## मय्यत कनखजूरों के घेरे में

एक तब्लीग़ी दोस्त ने हिन्दुस्तान का एक वाक़िआ सुनाया कि एक इलाक़े में हमारी जमाअत गई और वहां हम एक मस्जिद में ठहरे हुए थे और अपना काम कर रहे थे कि अचानक एक मोहल्ले के कुछ लोग हमारे पास आए और आकर कहा कि ज़रा हमारे घर चलिए हम लोग बहुत परेशान हैं। हमारे घर एक मय्यत हो गई है और मय्यत के साथ अजीब मामला हो रहा है। चुनांचे हम सब लोग उन के साथ चले गए, जब उन के घर पहुंचे तो अपनी आंखों से देखा कि एक औरत की लाश कमरे में रखी है और बहुत बड़े बड़े कनखजूरे उस लाश के चारों तरफ़ सर से लेकर पांव तक दांए बांए मुंह खोले खड़े हैं और वे इतनी ख़ौफ़नाक शक्ल के थे कि उन को देख कर इन्सान के रोंगटे खड़े हो जाएं, क़रीब जाने की किसी को हिम्मत न हो और सारे घर वाले डर के मारे दूसरे कमरे में जमा थे। डर की वजह से कोई आदमी उस कमरे में नहीं जा रहा था। घर वालों ने हम से कहा कि आप नेक

लोग हैं, हम आप को इसलिए बुला कर लाये हैं कि हमारा तो डर से बुरा हाल हो रहा है। आख़िर इस मय्यत को भी इस की जगह पर पहुंचाना है, कैसे इसको ग़ुस्ल दें किस तरह इस को यहां से उठाएं? ये कनखजूरे चारों तरफ़ से इस को घेरे हुए हैं। हमारा तो क़रीब जाते हुए बुरा हाल हो रहा है, आप साहिबान कुछ पढ़ कर सवाब पहुंचाएं और दुआ करें ताकि कम से कम इतना मौक़ा मिल जाए कि हम इस को इस की क़ब्र में उतार दें और इस फ़र्ज़ से मुक्त होजाएं।

ये कहते हैं कि हमें भी डर महसूस हुआ लेकिन हम देखते ही समझ गए कि यह इस के किसी गुनाह का अज़ाब है, जिसको अल्लाह तआला ने हमारी इब्रत के लिए ज़ाहिर किया है। चुनांचे हम सब एक कोने में बैठ कर उस के लिए इस्तिग़फ़ार करने लगे और अल्लाह तआला से दुआ करने लगे कि या अल्लाह मेहरबानी फ़रमा, और इतनी देर के लिए इस अज़ाब को हटा दीजिए कि हम इस को ग़ुस्ल और कफ़न देकर इस की क़ब्र तक पहुंचा दें और यह फ़रीज़ा अदा करलें। उस के बाद काफ़ी देर तक हम पढ़ते रहे, इस्तिग़फ़ार करते रहे, रोते रहे, और आंसू बहाते रहे। काफ़ी देर के बाद देखा कि वे सब कनखजूरे अचानक मय्यत का घेराव छोड़ कर एक कोने में

जमा हो गए बस हमने कहा कि अब अल्लाह तआ़ला की रहमत आगई है, उस ने अपना करम फ़रमाया, अब तुम लोग इस को ग़ुस्ल और कफ़न दे दो, चुनांचे ग़ुस्ल और कफ़न के बाद उस की नमाज़े जनाज़ा हुई और उसे क़ब्रिस्तान लेगए, और जाकर उस को क़ब्र में उतार दिया। जिस वक़्त क़ब्र में उतारा तो देखा कि वे सब कनखजूरे एक कोने में जमा हैं। अल्लाह तआ़ला हम सब की हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन।

## अज़ान की बेक़द्री का वबाल

उस को दफ़्नाने के बाद दोबारा उस के घर यह पूछने के लिए गए कि आख़िर उसका ऐसा कौन सा अ़मल था जिस की वजह से उसको यह इब्रतनाक अ़ज़ाब हुआ और ख़ुदा जाने अब उस के साथ क्या हो रहा है। उसकी मां ने बताया कि वह नेक पारसा तो नहीं थी, बेनमाज़ी थी। लेकिन एक बात जो मुझे याद है शायद उस की वजह से उस पर अ़ज़ाब हुआ हो। वह यह कि वह टी०वी० देखने की बहुत शौक़ीन थी, एक दिन वह टी०वी० देख रही थी और उस वक़्त उस प्रोग्राम में एक नाचने वाली एक ख़ास गाना गा रही थी, और वह गाना उस लड़की को बहुत पसन्द था। इसी दौरान अज़ान शुरू हो गई। मैं ने उस से कहा कि बेटी, अज़ान हो रही है, अल्लाह का नाम बुलन्द

हो रहा है, इस गाने की आवाज़ को बन्द कर दो, और टी०वी० बन्द कर दो। उसने कहा अम्मां अज़ान तो रोज़ाना ही होती है लेकिन यह प्रोग्राम और यह गाना फिर कहां आएगा। हमने सुनकर कहा कि बज़ाहिर यह मालूम होता है कि मरते ही फ़ौरन जो यह अज़ाब शुरू हुआ है यह उसी गुनाह का वबाल और अज़ाब है, इसलिए कि उस ने अल्लाह की अज़ान के मुक़ाबले में गाने को तरजीह (वरीयता) दी, जिस की वजह से यह अज़ाब हुआ। अस्तग़्फ़िरूल्लाह (अल्लाह माफ़ फ़रमाए)

## टी०वी० और रमज़ान की बेक़द्री

हक़ीक़त यह है कि जब आदमी टी०वी० का शौक़ीन हो जाता है और उस का आदी हो जाता है तो फिर उस को दीन की परवाह नहीं रहती। चुनांचे देख लीजिए हमारे यहां रमज़ान शरीफ़ में किस ढटाई के साथ टी०वी० देखा जाता है एक तरफ़ तरावीह हो रही है दूसरी तरफ़ टी०वी० चल रहा है। फ़िल्में आरही हैं और हमारे दुश्मन टी०वी० के इन प्रोग्रामों और फ़िल्मों को ऐसे वक़्तों में रखते हैं ताकि मुसलमान इफ़्तार तवज्जोह से न कर सकें, तरावीह न पढ़ सकें, चुनांचे मस्जिदों में तरावीह होती रहती है और लोग उस वक़्त टी०वी० देखने में मशग़ूल होते हैं और टी०वी० की वजह से नमाज़ में नहीं आते।

यह गुनाह हर घर में कसरत के साथ हो रहा है और तेज़ी से फैलता जा रहा है। लेकिन इस का अंजाम बड़ा ख़राब हैं, आख़िरत का अज़ाब बड़ा सख़्त है और इस में एक गुनाह नहीं है बल्कि यह बहुत से गुनाहों का मजमूआ है। ऐसी सूरत में हमें इस गुनाह से अपने आप को बचाना चाहिए, अपने घर वालों को बचाना चाहिए इस मज्लिस में जितने हज़रात (लोग) यहां जमा हैं, अगर हम सब अपने आप को इस गुनाह से बचा लेंगे तो एक माहौल बन जाएगा और इस तरह धीरे धीरे माहौल बनता चला जाएगा।

## क़ब्र के अज़ाब से बचने का तरीक़ा

बहर हाल, क़ब्र का अज़ाब बरहक़ है और हुज़ूरे पाक सल्ल० फ़रमा रहे हैं कि क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो, क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगो। हम लोग कहां जा रहे हैं ? कब अपने लिए क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगेंगे? पनाह मांगने का तरीक़ा यह है कि गुनाहों से तौबा करें और गुनाहों से बचने की फ़िक्र करें और इस के बाद फिर क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगेंगे तो उस वक़्त पनाह मांगना फ़ायदेमंद होगा। लेकिन अगर हम न तो गुनाह छोड़ें और न ही गुनाह छोड़ने का इरादा हो तो सिर्फ़ ज़बानी तौबा करने से क्या फ़ायदा? फिर क़ब्र

के अज़ाब से पनाह मांगने से क्या फ़ायदा? इस लिए पहले गुनाहों को छोड़ें। ख़ास कर इन बड़े बड़े गुनाहों को छोड़ दें, जैसे टी०वी० देखना, सूद का लेन देन करना, रिश्वत लेना देना, बद नज़री करना, औरतों का बेपर्दगी अपनाना, नामेहरम मर्दों के सामने बे पर्दा आना जाना, महफ़िलों आदि में औरतों का बन संवर कर ना मेहरम मर्दों से बे रोक टोक मिलना जुलना है। ये सब हमारे इस दौर के बड़े बड़े गुनाह हैं जिन से बचना हम सब की पहली ज़िम्मेदारी है और आगे इन से बचने की पूरी कोशिश करते रहें और फिर क़ब्र के अज़ाब से ख़ूब पनाह मांगें। अल्लाह तआला हम सब को और तमाम मुसलमानों को इन गुनाहों से और दूसरे तमाम गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं, और क़ब्र के अज़ाब से पनाह दें। आमीन

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ